गिरिराज गोवर्द्धन

(२)

गिरिराज गोवर्द्धन सर्वतीर्थों में श्रेष्ठ हैं। श्री वृंदावन एवं गोलोक के मुकुट सदृश कृष्ण-प्रिय यह गोवर्द्धन पूजित होकर गोप-गोपी और गायों की रक्षा करते हैं। जो पूर्णब्रह्म के आतपत्र है, उनके होते हुए श्रेष्ठ तीर्थ क्या और कोई हो सकता है? भगवान भुवनेश्वर ने इन्द्र-यज्ञ की अवज्ञा कर निज जन सहित जिनकी पूजा की, अनन्त ब्रह्माण्डाधिपति गोलोकपति परिपूर्णतम भगवान कृष्ण स्वयं जिस स्थान पर अवस्थित होकर सखागणों के साथ क्रीड़ा करते हैं, उनकी महिमा की कथा स्वयं ब्रह्मा भी चतुर्मुख कीर्तन करने में समर्थ नहीं हैं। गोवर्द्धन पर्वत पर पापविनाशिनी मानसी गंगा और विशेष गोविंद कुंड, शुभदचन्द्र सरोवर, राधाकुंड, कृष्ण कुंड, ललिता कुंड, गोपाल कुंड एवं कुसुमाकर कुंड अवस्थित है। श्रीकृष्ण के मुकुट के स्पर्श से यह शैल शिला मौलि चिह्नित हुई हैं; इस शिला के दर्शन से मानव देवता के मुकुट तुल्य हो जाता है। जिन सब शिलाओं में श्रीकृष्ण द्वारा अनेक चित्र लिखित है, आज भी वे समस्त पवित्र विचित्र शिलाएं 'चित्र शिला' के नाम से प्रसिद्ध हैं। (जिस शिला को बजाते हुए) श्रीकृष्ण बालकगण सहित क्रीड़ा करते थे वह महापाप विनाशिनी शिला 'वादिनीशिला' के नाम से विख्यात है। श्रीकृष्ण ने गोपालगण सह जिस स्थान में कन्दुक क्रीड़ा की थीं वह स्थान कन्दुक क्षेत्र के नाम से आख्यात है। उस क्षेत्र के दर्शन से इन्द्र पद एवं प्रणाम करने से ब्रह्मपद लाभ होता है; और उस धूलि में बिलुण्ठित होने से साक्षात् बैकुण्ठलोक की प्राप्ति होती है। कृष्ण ने इस स्थल पर गोपगणों के उष्नीष चुराए थे। गोवर्द्धन का वह महापापहर स्थान औष्नीष तीर्थ के नाम से अभिहित है।

एक बार गोपवधुगण दही विक्रेतार्थ उस पथ से गमन कर रही थीं। उसी समय मदनमोहन कृष्ण ने दूर से उनके नुपूर की झंकार सुनते ही पथ अवरुद्ध कर दिया। हाथों में छड़ी लिए गोपगण सह वंशीधर कृष्ण पाँवों को प्रसारित कर मार्ग अवरुद्ध करते हुए बोले - ''मुझे कर रूपी धन दान करो, तब पथ छोडूँगा।'' मार्ग के मध्य इस तरह बोलने पर गोपस्त्रियों ने कहा - ''तुम महाकुटिल हो एवं दूध के प्रति अपने लोभ को संवरण न कर सकने के कारण गोपबालकों के सहित पथ को अवरुद्ध कर खड़े हो, हमलोग तुम्हें तुम्हारे माता-पिता के साथ महा बलवान कंस द्वारा बंदी करवाएंगे।'' गोपीगण द्वारा कृष्ण को कंस का भय दिखलाने पर तब कृष्ण ने निर्भीक व सहज भाव से कहा - ''मैं गौ गण की शपथ लेकर बोल रहा हूँ कि उग्रदण्डधारी कंस को वंश सहित नष्ट कर दूँगा और तुम लोगों से भी यदुपुर लेजाकर ऐसा ही आचरण करूँगा।'' नंदनन्दन कृष्ण के इस प्रकार बोलने पर प्रत्येक बालक गण ने निर्भय हो अपने दधि पात्र को सहआनन्द से नीचे रख दिया। यह सब देखकर गोपियों ने कहा - ''अहो! यह नंद पुत्र अत्यन्त धूर्त, निर्भीक, निरंकुश भाषणशील, स्वगृह में निरीह एवं बाहर में बलवान है। हम लोग आज ही नंद-यशोदा को इसकी शिकायत करेंगे।'' गोपियों ने इस तरह बोलते हुए हँसते-हँसते स्वगृह की ओर प्रस्थान किया। तब श्रीकृष्ण ने कदम्ब व पलाश वृक्ष के पत्तों से निर्मित द्रोणी में सखागण सहित दधि को ग्रहण किया। तब से उस स्थान के वृक्ष समूहों के पत्तों का आकार द्रोणाकार हो गया एवं वह महापुण्य स्थल 'द्रोण' नाम से अभिहित हुआ।

जहाँ कृष्ण अपने सखागण सहित नेत्र आच्छादित कर लीन हुए वहाँ पापनाशन ''लौकिक'' नामक तीर्थ का उद्‌भव हुआ। कदम्ब खण्ड का तीर्थ सर्वदा लीलामयी रहा। ऐसा प्रचलित है कि उस क्षेत्र के दर्शन मात्र से ही नर नारायण में परिवर्तित हो जाते हैं। गोवर्द्धन गिरि के जिस स्थान पर श्रीकृष्ण ने राधा सहित रास में श्रृंगार किया था वह स्थल ''श्रृंगार मण्डल'' नाम से ख्याति प्राप्त है। जिस प्रकार श्रीकृष्ण ने गोवर्द्धन पर्वत को धारण किया था, श्रृंगार मण्डल में वही रूप विद्यमान है। जिन्होंने गोवर्द्धन गिरि में सर्वदा लीला की है सुधीगण उन्हीं श्रीनाथ को ''देव दमन'' नाम से अभिहित करते हैं। भारतवर्ष के चारों दिशाओं के पर्वतीय अंचल में जगन्नाथ, रंगनाथ, द्वारकानाथ और बद्रीनाथ नाम से भगवान विद्यमान है एवं पूर्वोक्त श्रीनाथ श्रीगोवर्द्धन गिरि के मध्य स्थित है। पवित्र भारतवर्ष में ये सुरेश्वर पंचनाथ श्रेष्ठ धर्ममण्डल के स्तंभ स्वरूप व आर्त्तजनों के त्राण स्वरूप हैं।

(गर्ग संहिता से संगृहीत)

-मातृचरणाश्रिता श्रीमती ज्योति पारेख